46

पहाड़ों की चोटियां और घाटियां

बाइबल पाठ #18

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमशः)।

ज. हेरोदेस के इलाके से एक और बार निकलना।

1. गलील में: यीशु के शत्रुओं द्वारा एक और आक्रमण-उसके बाद एक और बार निकलना (मत्ती 15:39ख-16:12; मरकुस 8:10-21)।
2. बैतसैदा में: एक अन्धा चंगा किया गया (मरकुस 8:22-26)।
3. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: अच्छा अंगीकार (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21)।
4. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: यीशु की मृत्यु की भविष्यवाणी (मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-38; लूका 9:22-27)।
5. कैसरिया फिलिप्पी के निकट (हर्मोन पर्वत पर?): रूपांतरण (मत्ती 17:1-13; मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36)।

परिचय

पिछले पाठ में हमने यीशु को गलील से अर्थात गलील की झील के पूर्व में और फिनीके के सूर और सैदा इलाके में जाने की शृंखला आरम्भ करते देखा था।[1] इस पाठ में, हम मसीह को फिर सुदूर उत्तर में और कैसरिया फिलिप्पी के पहाड़ी क्षेत्र में जाते देखेंगे।

हर बार का जाना ऊंचाई पर ही था। उदाहरण के लिए, उनमें से एक में प्रभु ने पांच हज़ार को खिलाया और फिर पानी पर चला। परन्तु यादगारी घटनाएं इसी में हैं। एक सप्ताह में ही ये सब घटनाएं घटीं: अच्छा अंगीकार; मसीह का अपनी कलीसिया बनाने की योजना बताना; यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान, द्वितीय आगमन के बारे में पहली स्पष्ट अर्थात निश्चित घोषणाएं; और रूपान्तर। अधिकतर टीकाकार इस बात से सहमत हैं कि प्रभु के लिए यह एक असाधारण अर्थात चरम वाला, या उसकी सेवकाई का टर्निंग प्वायंट था।

मैं इस पाठ को ''पहाड़ों की चोटियां और घाटियां'' नाम दे रहा हूं ज़्योंकि यीशु के लिए यह समय भावनाओं का चरम ही रहा होगा (देखें मरकुस 8:12क)। सम्पूर्ण मनुष्य होने के कारण, मसीह ''सब बातों में'' हमारे जैसा बनाया गया था (इब्रानियों 2:17)

अर्थात हमारी ही तरह वह प्रसन्न हो सकता था (लूका 10:21), और उदास हो सकता था (लूका 19:41; यूहन्ना 11:35)। इस प्रस्तुति के दौरान होने वाली घटनाओं के समय, यीशु हृदयविदारक तराइयों से आनन्दित करने वाले पहाड़ की चोटियों तक गया, फिर तराइयों में लौट आया।

अध्ययन करते हुए, हम अपने प्रभु के मन के बारे में और जानेंगे। हमें अपने बारे में भी और पता चल सकता है।

एक घाटी में: यीशु को क्रोध दिलाया गया (मत्ती 15:39-16:12; मरकुस 8:10-21)

हमारे पाठ के आरम्भ में, यीशु अभी-अभी मगदन और दलमुता के क्षेत्र अर्थात, गलील में वापस आया था (मत्ती 15:39; मरकुस 8:10)। यह स्थान मगदला गांवों के निकट हो सकता है, जो तिबेरियास से चार या अधिक मील उत्तर की ओर था।[2]

अपने शत्रुओं द्वारा परेशान किया गया

मसीह के आने पर, उसके पुराने विरोधी, फरीसी भी आ गए और "उससे वाद-विवाद करने लगे" (मरकुस 8:11क)। हैरानी की बात है कि सदूकी उनके साथ थे (मत्ती 16:1)। हमने अपने अध्ययन में सदूकियों के बारे में बात की थी,[3] परन्तु सुसमाचार के वृत्तांतों में उनका उल्लेख यहां पहली बार मिलता है। सामान्यतया, फरीसी और सदूकी जन्मजात शत्रु होते थे; परन्तु दोनों ही यीशु को खतरा मानते थे इसलिए उन्होंने उसे खत्म करने के लिए आपस में समझौता कर लिया।[4] राजनीति की तरह ही, घृणा "किसी को भी दोस्त बना" लेती है।[5]

इस अवसर पर, फरीसियों ने पहले दी गई चुनौती ही दोहराई: उन्होंने मसीह से "उसे जांचने के लिए उस से कोई स्वर्गीय चिह्न मांगा" (मरकुस 8:11ख; देखें मत्ती 12:38-42; 16:1; यूहन्ना 2:18)। प्रभु ने मुर्दों को जिलाने सहित, इसलिए सैकड़ों आश्चर्यकर्म किए थे, इसलिए ठीक-ठीक कहना कठिन होगा कि उन्होंने ज्या चिह्न मांगा था। "स्वर्गीय" शब्द से कुछ पता चल सकता है।[6] मत्ती 16:2, 3 में "स्वर्ग" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ "आकाश" है। हो सकता है कि फरीसी यीशु को यहोशू की तरह सूरज और चांद को रोकने (यहोशू 10:12, 13), एलिय्याह की तरह आसमान से आग बुलाने (1 राजा 18:38) या कोई ऐसा चिह्न दिखाने की चुनौती दे रहे हों।

मरकुस के अनुसार, फरीसियों और सदूकियों के कारण मसीह ने "अपनी आत्मा में आह" भरी (मरकुस 8:12)। वह जानता था कि चाहे कितना भी बड़ा आश्चर्यकर्म दिखा दिया जाए उन्हें सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता।[7] वे उस अन्धे आदमी की तरह थे जो कह रहा हो, "मुझे बैंजनी रंग दिखाओ *तो* ही मैं विश्वास करूंगा कि ऐसा रंग होता भी है।" उनकी आंखें बन्द थीं; उनके मन कठोर थे; उन्हें समझाने का कोई तरीका नहीं था।

यीशु ने उन्हें संक्षिप्त उत्तर दिया। उसने कहा कि वे आसमान को देखकर समय में

भविष्यवाणी कर सकते हैं।[8] परन्तु अपने मनों की पूर्वधारणा के कारण, वे यीशु और उसकी सेवकाई को देखकर समझ नहीं पा रहे थे कि वे वह कौन हैं (मत्ती 16:2, 3)।[9] उसका निष्कर्ष था ''इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढ़ते हैं, पर यूनुस के चिह्न को छोड़ कोई और चिह्न उन्हें न दिया जाएगा'' (मत्ती 16:4क)। यह उसके ईश्वरीय होने अर्थात उसके पुनरुत्थान के अन्तिम प्रमाण की अप्रकट बात थी (देखें रोमियों 1:4)। जैसे योना बड़ी मछली के पेट में तीन दिन तक रहा था, वैसे ही मसीह ने कब्र में तीन दिन तक रहना था (मत्ती 12:40)।[10]

अपने मित्रों द्वारा निराश किया गया

यदि यीशु ने गलील में समय बिताने की योजना बनाई थी, तो उसके शत्रुओं के तुरन्त आने से वह योजना मिट्टी में मिल गई। अचानक ''वह उन्हें छोड़कर चला गया'' (मत्ती 16:4ख)। अपने चेलों के साथ बैठकर एक बार फिर वह गलील की झील के पूर्व में चला गया (मत्ती 8:13)–इस बार बैतसैदा की ओर।[11]

इस दौरे में यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी: ''देखो, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना'' (मत्ती 16:6)। उसने यह भी कहा, ''फरीसियों के खमीर ... से चौकस रहो''[12] (मरकुस 8:15)–सम्भवतया वह हेरोदियों के बारे में कह रहा था जो पहले ही यीशु को खत्म करने के लिए फरीसियों के साथ मिलकर काम कर रहे थे (मरकुस 3:6)।[13]

''खमीर'' के रूपक पवित्र शास्त्र में प्रभाव, विशेषकर नकारात्मक प्रभाव के लिए अक्सर इस्तेमाल हुआ है।[14] यीशु के मन में इन गुटों द्वारा सिखाई जाने वाली पक्षपातपूर्ण बातें होंगी जो उन्हें उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करने के रूप में रुकावट बन रही थीं। चेलों को भी मसीहा और उसके राज्य के बारे में अपनी विचारधारा से संघर्ष करना पड़ा था। प्रभु की चेतावनी को इस प्रकार कहा जा सकता है, ''अपने पहले विचारों से प्रभावित होने से चौकस रहें जो आपको सच्चाई की खोज करने से रोक सकते हैं।''

प्रेरितों को कुछ पता नहीं था कि मसीह किसकी बात कर रहा है। ''खमीर'' की बात से उनके ध्यान में रोटी ही आई। यीशु को इतना अचानक जाना पड़ा था कि उनके पास अपने साथ केवल एक ही रोटी थी (मरकुस 8:14)। उन्होंने फैसला किया कि यात्रा के लिए पूरा सामान न लेने के लिए उनके प्रभु की बातें दोषी थीं (मत्ती 16:7; 8:16)।

यीशु उनकी समझ की कमी के कारण परेशान हुआ था, जिस कारण उसने उन्हें ''हे अल्पविश्वासियो'' कहा (मत्ती 16:8)। वे उसी स्थान के निकट थे, जहां उसने कुछ समय पहले पांच हज़ार लोगों को खिलाया था (लूका 9:10–17), और उस स्थान से दूर नहीं थे जहां उसने चार हज़ार को खिलाया था (मरकुस 7:31; 8:1–9)।[15] यदि उसने थोड़े से सामान से हज़ारों लोगों को खिला दिया था (मत्ती 16:9, 10), तो उन्हें समझ होनी चाहिए थी कि आवश्यकता पड़ने पर उसे एक रोटी से छोटे से झुण्ड को खिलाने में कोई परेशानी नहीं होनी थी–और इसलिए उसके मन में शारीरिक रोटी की बात नहीं थी। अन्ततः चेलों

''की समझ में आया कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की *शिक्षा* से चौकस रहने को कहा था'' (मत्ती 16:12)।

एक तराई में: समानुभूति से भरा यीशु[16] (परन्तु ...) (मरकुस 8:22-26[17])

सामान्य की तरह, गलील से जाने के लिए मसीह के कई उद्देश्य थे: वह अपने शत्रुओं से दूर रहना चाहता था (देखें मत्ती 16:4ख; मरकुस 8:13), परन्तु चेलों के साथ अकेले में समय भी बिताना चाहता था। यह दूसरा उद्देश्य उसकी मृत्यु के निकट आने पर और स्पष्ट होता गया (मरकुस 8:31)। उसने सुदूर उत्तर में अर्थात कैसरिया फिलिप्पी के इलाके में जाने का फैसला किया, जहां कम से कम ध्यान भंग होता था।

वे उस दिशा में चल पड़े और ''बैतसैदा में आए'' (मरकुस 8:22क)। यह झील के उत्तर पूर्वी तट पर, बैतसैदा-जुलियास था।[18] नगर में पहुंचने पर, लोग ''एक अन्धे को यीशु के पास लाए'' (आयत 22ख) ताकि वह उसे चंगा करे। मसीह ने उनकी विनती ठुकराई नहीं। हमेशा की तरह, उसे तरस आया था, परन्तु उसने भीड़ से बचने की ठान रखी थी, क्योंकि अधिक भीड़ हमेशा उन्हें रास्ते में देर कर देती थी। वह उस आदमी को चंगा करने से पहले नगर के बाहर ले गया (आयत 23क) और बाद में उसे बिना किसी को बताए सीधे घर जाने को कहा (आयत 26)।

चंगाई की इस घटना में कई असामान्य बातें हैं। यीशु चंगाई पाने वालों को बहुत कम स्पर्श करता था। केवल एक और बार उसने चंगाई के लिए थूक का इस्तेमाल किया (मरकुस 7:33, 34)। परन्तु इस घटना की सबसे असाधारण बात थी कि केवल यही आश्चर्यकर्म दो चरणों में हुआ था।[19] सुझाव दिया गया है कि क्योंकि यह चेलों के अपनी समझ और विश्वास के साथ संघर्ष की दो कहानियों के बीच सैंडविच की तरह है, इसलिए यह सिखाने के लिए एक सबक है कि विश्वास एकदम नहीं, बल्कि चरणों में आता है। हम सचमुच नहीं जानते कि यीशु का उद्देश्य क्या था।

हमने देखा है कि छूने, थूकने और यहां तक कि इस आश्चर्यकर्म के दो चरणों में होने की विलक्षण बात संयोग ही थे। यह समझाने के लिए कि सामर्थ उसके तरीके में नहीं बल्कि स्वयं उसमें है, मसीह ने अलग-अलग ढंगों का इस्तेमाल किया।

पहाड़ की एक चोटी पर: यीशु प्रसन्न हुआ (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21)

बैतसैदा-जुलियास से मसीह और उसके अनुयायी कैसरिया फिलिप्पी तक आगे बढ़ते रहे। यहां यीशु ने यह देखने के लिए कि उसके चेलों को समझ आ गई है कि वह कौन था उनसे एक प्रश्न पूछना था। चेलों के लिए यह एक कठिन परीक्षा थी।

एक विशेष परीक्षा

प्रार्थना करने के बाद (लूका 9:18), मसीह ने अपने चेलों को बुलाकर पूछा, ''लोग मनुष्य के पुत्र को ज़्या कहते हैं?'' (मत्ती 16:13)। उन्होंने उज़र दिया, ''कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यवक्ताओं में से कोई एक कहते हैं'' (मत्ती 16:14; देखें मरकुस 6:14-16; लूका 9:7, 8)।[20] यह सभी लोग परमेश्वर के असाधारण सेवक थे। लग सकता है कि यह एक प्रशंसा थी, परन्तु ऐसा नहीं है। यह तो ठुकराना था: मसीहा के रूप में यीशु को ठुकराना।

फिर यीशु ने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: ''परन्तु *तुम* मुझे ज़्या कहते हो?'' (मत्ती 16:15)। उसके प्रेरित आरज़्भ में उसके पीछे इसलिए चले थे ज़्योंकि उन्होंने सोचा था कि वह ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है (यूहन्ना 1:41, 49), परन्तु उसने मसीहा के विषय में कौमी अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया था। कुछ समय के लिए, बहुत बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, परन्तु फिर लोकमत उसके विरुद्ध होने लगा (यूहन्ना 6:66)। इस सब के प्रकाश में, ज़्या चेले अभी भी उसमें विश्वास रखते थे? ज़्या उन्हें अभी भी यकीन, पज़्का यकीन था कि वह ही मसीहा था?

पतरस ने कहा[21] ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (मत्ती 16:16) जिसे अच्छे अंगीकार के रूप में जाना जाता है। ''मसीह'' या ''ख्रिस्तुस'' ''मसीहा'' का ही यूनानी रूप है। पतरस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि वह सचमुच विश्वास करता था कि यीशु ही भविष्यवक्ताओं द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं का पूरा होना था, जिसकी राह यहूदी लोग देख रहे थे।

एक विशेष व्याज़्या

यीशु के स्वर में आनन्द की कल्पना करना कठिन नहीं है, ''हे शमौन, योना के पुत्र,[22] तू धन्य है! ज़्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है,[23] यह बात तुझ पर प्रकट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं, तू पतरस है और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:17, 18क)।

''पतरस'' और ''पत्थर'' शब्दों पर विवाद पाया जाता है। कैथोलिक लोग यह दावा करते हैं कि आयत 18 सिखाती है कि कलीसिया पतरस पर ही बनी थी।[24] यह सच है कि यूनानी शब्द के अनुवाद ''पतरस'' का अर्थ ''पत्थर'' ही है-परन्तु यीशु ने आयत 18 में ''पत्थर'' के लिए दो अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल किया। ''पतरस'' का मूल शब्द *पैट्रॉस* है, जबकि ''चट्टान'' के लिए शब्द *पैट्रा* है। [मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि यद्यपि हिन्दी के पुराने अनुवाद में केवल पत्थर लिखा गया है, परन्तु अंग्रेज़ी के अधिकतर अनुवादों में चट्टान ही है। बाइबल सोसायटी के हिन्दी के संशोधित अनुवाद में नीचे टिप्पणी में यह अन्तर स्पष्ट किया गया है-अनुवादक।] दो अलग-अलग शब्दों का अनुवाद ही नहीं हुआ, पहला शब्द पुलिंग में जबकि दूसरा स्त्रीलिंग में है। इसके अलावा शब्दों के अर्थ अलग-अलग थे। डब्ल्यू. ई. वाइन ने लिखा है, '' *पैट्रा* एक बहुत बड़ी चट्टान को दर्शाता है, जो

पैट्रॉस से, अर्थात अलग किए हुए पत्थर या चट्टान के टुकड़े, या एक पत्थर से अलग है जिसे आसानी से फैंका या हिलाया जा सकता है।''[25]

मसीह शज़्द संकेतों का इस्तेमाल कर रहा था। अपने दिमाग में, मैं उसे यह कहते हुए कि ''तू पतरस, अर्थात एक पत्थर है'' एक पत्थर को अपने हाथों में इधर उधर करते देख सकता हूं। फिर मैं उसे कैसरिया फिलिप्पी की चट्टान रूपी नींव की ओर इशारा करते और यह कहते देखता हूं, ''लेकिन मैं अपनी कलीसिया *वैसी* चट्टान पर बनाऊंगा।''

वह चट्टान कौन सी *थी* जिस पर प्रभु ने अपनी कलीसिया बनानी थी? बहुत से गैर-कैथोलिक टीकाकार इस बात से सहमत हैं कि चट्टान वह मूल सच्चाई ही थी जिसका पतरस ने अभी-अभी अंगीकार किया था।[26] उदाहरण के लिए जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे ने ध्यान दिलाया है:

> ... इस रूपक में बनाने वाला यीशु स्वयं है, और शमौन पतरस के हाथ में कुंजियां हैं, इसलिए दोनों में से किसी को भी नींव के रूप में मानना उपयुज़्त हो सकता है। इसलिए नींव वह अंगीकार होना चाहिए जो पतरस ने अभी अभी किया था, ज़्योंकि ऐसी प्रासंगिकता के लिए यही उज़रदायी है।[27]

कितने दुख की बात है कि पतरस/पत्थर के विवाद ने इस अवसर के वास्तविक महत्व को अस्पष्ट कर दिया है! पतरस के अंगीकार से प्रोत्साहित होकर, यीशु को लगा था कि उसके चेले भविष्य के लिए तैयार हैं। इसलिए उसने पहले वह चौंकाने वाली बात कही कि वह *कलीसिया,* अपनी कलीसिया को बनाने के लिए आया था (देखें इफिसियों 1:22, 23; 2:16; 3:10, 11; 4:4; कुलुस्सियों 1:18)। मैं इस बात को ''चौंकाने वाला'' कहता हूं, ज़्यों इसकी बिल्कुल उज़्मीद नहीं होगी। यह एक सांसारिक अर्थात भौतिक राज्य की यहूदी अवधारणा के बिल्कुल विपरीत था।

यह घोषणा करते हुए मसीह ने मसीहा के/राज्य की बात को जिससे उसके चेले परिचित थे छोड़ा नहीं (देखें मज़ी 16:19); बल्कि वास्तव में वह यह घोषणा कर रहा था कि उसका राज्य भौतिक नहीं था आत्मिक होगा। उसे कोई राजनैतिक संस्थान बनाने में रुचि नहीं थी ज़्योंकि वह तो अपनी *कलीसिया* बनाने वाला था।

नये नियम में ''कलीसिया'' शज़्द का यह पहली बार इस्तेमाल था, परन्तु निश्चित रूप में अन्तिम बार नहीं था। नये नियम में ''कलीसिया'' शज़्द सौ से अधिक बार आया है।[28] यीशु के पुनरुत्थान तथा राज्य/कलीसिया की स्थापना के बाद, मसीह के अनुयायियों को एक समूह के रूप में इसी शज़्द से पुकारा जाता था।

आइए मज़ी 16:18, 19 में पतरस से कही यीशु की बात पर लौटते हैं। दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा का राज्य अविनाशी होगा (दानिय्येल 2:44क)। अब मसीह ने घोषणा कर दी कि उसकी कलीसिया/राज्य कभी नाश नहीं होगा: ''और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मज़ी 16:18ख)। ''अधोलोक'' मृतकों के ''अदृश्य संसार'' को कहा गया है। और हर व्यज़्ति के लिए, अधोलोक के ''फाटक'' का अर्थ मृत्यु

है। *यीशु* की मृत्यु से कलीसिया नष्ट नहीं होनी थी: स्पष्टतया शैतान को लगा कि यीशु के क्रूस पर चढ़ने से उसने परमेश्वर की योजनाओं को बिगाड़ दिया है, परन्तु कलीसिया के अस्तित्व के लिए उसका मरना आवश्यक था (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:23, 25)। *कलीसिया के सदस्यों* की मृत्यु भी इसे नाश नहीं कर सकती थी।[29] बाद में शैतान ने मसीही लोगों के विरुद्ध सताव आरम्भ करना था, परन्तु कलीसिया ने उसकी नृशंसता से नष्ट होने के बजाय बढ़ना ही था (प्रेरितों 8:1-4)।

फिर मसीह ने बोलने में उतावले प्रेरित को यह प्रतिज्ञा देकर पुरस्कार दिया: ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा। और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा'' (मत्ती 16:19)।

इस प्रतिज्ञा का दूसरा भाग अर्थात बांधना और खोलना पतरस का ही विशेषाधिकार नहीं था क्योंकि बाद में यह प्रतिज्ञा सब प्रेरितों से की गई थी (मत्ती 18:18)। ध्यान दें कि वचन में क्या लिखा था: ''... जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में *बंधेगा;* और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में *खुलेगा*।'' यह कुछ अटपटा सा लगता है,[30] परन्तु यही मूल अनुवाद है। यीशु प्रेरितों की परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई शिक्षा के महत्व पर ज़ोर दे रहा था (अर्थात इसने लोगों को ''बांधना'' भी था और ''खोलना'' भी), बल्कि वह तो यह भी ज़ोर दे रहा था कि शिक्षा देने वाले वे नहीं होंगे क्योंकि ''बांधना'' और ''खोलना'' *स्वर्ग में* होना था, और तभी (केवल तभी) परमेश्वर की प्रेरणा से, प्रेरित पृथ्वी पर ''बांध'' व ''खोल'' सकते थे।

यीशु ने पतरस को एक विशेष सौभाग्य अधिकार अवश्य-प्रतिज्ञा का पहला भाग दिया कि ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा।'' कुंजियों का मुख्य काम खोलकर प्रवेश करने की अनुमति देना होता है। यहूदियों तथा अन्यजातियों को उद्धार पाने का ढंग सबसे पहले पतरस ने ही बताना था (प्रेरितों 2:14-43; 10:24-43, 47; 15:7), और इस प्रकार उसने उन्हें राज्य/कलीसिया में प्रवेश करने का ढंग बताना था। लोगों को उद्धार पाने का ढंग बताने की आशीष अकेले पतरस को ही नहीं मिली थी बल्कि उद्धार का सुसमाचार सब प्रेरितों ने सुनाया था। पतरस को मिला विशेष पुरस्कार इस काम को करने वाला *पहला व्यक्ति* होना था।

यह एक रोमांचकारी दिन था। चेलों को अभी बहुत कुछ सीखना था, परन्तु उनका विश्वास पक्का था। यीशु ने प्रसन्न होना था-परन्तु ''उसने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूं'' (मत्ती 16:20)। इस सच्चाई का दृढ़ता से प्रचार करने का समय अभी आना था (देखें प्रेरितों 2:36), परन्तु वह समय अभी आया नहीं था।

एक तराई में: यीशु पर बोझ डाला गया (मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-38; लूका 9:22-27)

जब यीशु को लगा कि उसके चेले भविष्य के बारे में जानने के लिए तैयार हैं, तो उसने अपनी कलीसिया बनाने की घोषणा कर दी। परन्तु उनके लिए इस घोषणा को स्वीकार

करना और जोड़ना कठिन था कि उसकी मृत्यु के बिना कलीसिया नहीं हो सकती थी। कलीसिया तो उसके लहू से उद्धार पाए हुए लोगों की देह होनी थी (इफिसियों 5:23, 25; देखें प्रेरितों 20:28)। उसके लिए प्रेरितों को यह बताने का समय आ गया था कि उसका मरना आवश्यक है।

उस दुर्व्यवहार से परेशान जो उस पर होने वाला था

मसीह ने अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में पहले सांकेतिक शब्दों में बात की थी (मत्ती 9:15; 10:38; 12:38-40; यूहन्ना 2:19-22; 3:14, 15)। परन्तु अब उसने सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल बन्द कर दिया। मत्ती ने लिखा है, ''उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊं और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं'' (मत्ती 16:21)। ''पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों'' महासभा के लिए प्रयुक्त होने वाला पर्यायवाची शब्द था,[31] जिसमें ये तीनों लोग प्रमुख थे। अपने मन में ''अवश्य है'' शब्द को रेखांकित कर लें: यीशु परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्यों को पूरा करने को *समर्पित* था (यूहन्ना 6:38)! मरकुस का वृत्तांत कहता है कि मसीह ''उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिए अवश्य है, कि ... मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे। उस ने यह बात उन से *साफ-साफ* कह दी'' (मरकुस 8:31, 32क)।

अपने आस-पास के लोगों में पाई जाने वाली नासमझी से बोझिल

यीशु के साफ़ साफ़ कहने से भी चेलों को उसकी बात समझना और उसे स्वीकार करना आसान नहीं लगा। जीवन भर उन्हें यही सिखाया गया था कि मसीहा का राज्य राजनैतिक होगा। इसलिए मरने की मसीह की बातों की उन्हें कुछ भी समझ न आई। यदि आपका पालन पोषण गलत धार्मिक शिक्षा में हुआ हो परन्तु बाद में आपको सच्चाई समझ आई गई हो तो आप उनकी उलझन का महत्व समझ सकते हैं।

पतरस को विशेष तौर पर प्रभु की घोषणा से समस्याएं थीं। आखिर, उसने अभी-अभी यीशु के ख्रिस्तुस अर्थात मसीहा होने का अंगीकार किया था। अपने मन में, वह यह भी अंगीकार कर रहा था कि उसे पूरा भरोसा है कि यीशु आगे चलकर अपना राज्य अर्थात *भौतिक* राज्य स्थापित करेगा! इस प्रेरित के लिए, मरे हुए मसीहा को शासन करने वाले मसीहा की अवधारणा के साथ नहीं मिलाया जा सकता था।[32] इसलिए उसने स्वयं मसीह की गलती को सुधारने की कोशिश की!

प्रभु को दूसरे चेलों के सामने अपमानित न करने की इच्छा से, ''पतरस उसे अलग ले'' गया। अकेले में ले जाकर वह उसे ''झिड़कने लगा, हे प्रभु! परमेश्वर न करे। तुझ पर ऐसा कभी न होगा'' (मत्ती 16:22)। इस अवसर पर पतरस की स्पष्टवादिता लगभग समझ से बाहर है, परन्तु ऐसे लोग शुरू से रहे हैं जो प्रभु के पीछे चलने का दावा तो करते हैं परन्तु उन्हें लगता है कि उन्हें उससे अधिक ज्ञान है।

बोलने में उतावले इस प्रेरित को यीशु की डांट अब तक की सबसे कठोर डांट थी: ''उस ने फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो। तू मेरे लिए ठोकर का कारण है ...'' (मत्ती 16:23)। इससे थोड़ी ही देर पहले उसने उसे ''पतरस'' अर्थात भरोसे योग्य ''पत्थर'' कहा था। अब उसने उसे ''शैतान'' अर्थात अपना विरोधी कहा।[33] मसीह यह कह रहा था कि उसकी मृत्यु से उसे रोकने की कोशिश करके पतरस शैतान के हाथों का खिलौना बन गया है।[34]

पतरस की समस्या यह थी कि वह क्रूस को स्वर्गीय दृष्टिकोण से देखने के बजाय मानवीय आंख से देख रहा था। यीशु ने उससे कहा कि ''तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है'' (मत्ती 16:23)।

प्रभु का मन अपनी आने वाली मृत्यु से भारी था (मत्ती 26:38, 39)। इसके अलावा उसके राज्य और शासन की वास्तविक प्रकृति को उसके चेलों का न समझ पाना भी इसका एक कारण था। वे मृत्यु के बजाय मुकुट,[35] क्रूस के बजाय मुकुटों, सताव के बजाय स्तुति को ध्यान में रखकर सोच रहे थे।

यीशु ने सब चेलों को बुलाकर उनसे कहा:[36]

> यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। ज़्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे ज़्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में ज़्या देगा? (मत्ती 16:24-26; मरकुस 8:34-37; लूका 9:23-25 भी देखें)।

उसने और कहा, ''जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से लजाएगा'' (मरकुस 8:38)। इन शब्दों की सामान्य प्रासंगिकता है, परन्तु याद रखें कि पतरस को उन शब्दों से ''शर्म आई'' थी जो यीशु ने अपनी मृत्यु के बारे में कहे थे।

डांट लगाते हुए, मसीह ने ''पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित'' आने की बात की थी। अब उसने अपने सुनने वालों को आश्वासन दिया कि ''मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में *आएगा,* और उस समय वह हर एक को उस के कामों के अनुसार प्रतिफल देगा'' (मत्ती 16:27)। यह द्वितीय आगमन की पहली स्पष्ट भविष्यवाणी थी। इस नये प्रकाशन से प्रेरितों के मन अवश्य कांप गए होंगे!

प्रभु ने अपने चेलों को यह आश्वासन देते हुए समाप्त किया कि उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी का अर्थ यह नहीं है कि अपना राज्य स्थापित करने की उसकी योजनाएं छोड़ दी गई हैं: ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि

न चखेंगे[37]'' (मरकुस 9:1; देखें मत्ती 16:28; लूका 9:27)। ''*सामर्थ* सहित'' वाक्यांश पर ध्यान दें। अपने पिता के पास स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले, मसीह ने प्रेरितों को बताना था कि जब पवित्र आत्मा उन पर उतरेगा तो उन्हें ''*सामर्थ*'' मिलेगी (प्रेरितों 1:8) और ''जब तक स्वर्ग से *सामर्थ* न पा'' लें तब तक यरूशलेम में ही ठहरे रहें (लूका 24:49)। स्वर्ग पर उठाए जाने के दस दिन बाद यहूदियों के पिन्तेकुस्त नामक पर्व पर, उन पर स्वर्ग से सामर्थ भेजी गई (प्रेरितों 2:1-4) और यीशु ने अपनी कलीसिया/राज्य बनाने की प्रतिज्ञा पूरी की। (पढ़ें प्रेरितों 5:11; 8:1; कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 1:6, 9)।[38]

क्या प्रेरितों को समझ थी कि उनके जीवनकाल में सामर्थ सहित राज्य के आने से मसीह का क्या अर्थ था? नहीं, उन्हें कलीसिया की स्थापना की उसकी घोषणा और उसके दोबारा आने की शिक्षा की कोई समझ नहीं थी-परन्तु बीज तो रोप दिया गया था।

पहाड़ की एक चोटी पर: यीशु प्रोत्साहित हुआ (मत्ती 17:1-13; मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36)

सुसमाचार के वृत्तांतों में यह नहीं बताया गया कि अगले कुछ दिनों में क्या हुआ। हम चेलों द्वारा यीशु की बातों को जो उन्हें अब तक सिखाई गई थी अपने जीवन से मिलाने का संघर्ष करते हुए बढ़ते तनाव की केवल कल्पना कर सकते हैं। उस समय के अन्त में, प्रभु पहाड़ की चोटी के एक और अनुभव के लिए तैयार होगा, और उसे यह अनुभव मिला भी।

पहाड़ पर: यीशु तैयार हुआ

> छह दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उस के भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। और उन के साम्हने उस का रूपान्तर हुआ और उस का मुंह सूर्य की नाईं चमका और उस का वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। और देखो, मूसा और एलिय्याह उस के साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए (मत्ती 17:1-3)।

लूका ने मूसा, एलिय्याह और मसीह में हुई बातचीत का विषय-वस्तु लिखा है: वे ''उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था'' (लूका 9:31)। ''मरने'' शब्द पर ध्यान दें। मसीहा के मरने के विचार की चेलों को समझ नहीं आ रही थी, परन्तु पुराने नियम के इन नायकों को समझ थी कि हर युग के विश्वासियों के लिए उसका मरना कितना आवश्यक था (इब्रानियों 9:15)।

उस अनुभव से बहुत ही प्रभावित होकर और इस बात से अनजान कि क्या कहना चाहिए (मरकुस 9:6), पतरस कहने लगा, ''हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है। इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिए एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए'' (मत्ती 17:4)। ''वह बोल ही रहा था, कि देखो; एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया। और देखो, उस बादल में से यह शब्द निकला, यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं इस की

सुनो'' (मत्ती 17:5)। उस आवाज़ के कहने के बाद, ''उन्होंने एकाएक चारों ओर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा'' (मरकुस 9:8)।

यह दर्शन चेलों के लाभ के लिए था ज़्योंकि इससे पतरस द्वारा किए गए अंगीकार की पुष्टि हो गई और यरूशलेम में अपनी होने वाली मृत्यु की प्रभु की भविष्यवाणी की भी पुष्टि हो गई। इससे प्रेरितों पर यह ज़ोर दिया गया कि उन्हें चाहिए कि वह उनसे जो भी कहे वे ''उसकी सुनें''!

यह अभूतपूर्व घटना यीशु के लाभ के लिए भी थी। बारहों को उसकी मृत्यु के महत्व की समझ नहीं थी, परन्तु मूसा और एलिय्याह को थी। मनुष्यों ने उसे ठुकराया हो सकता है, परन्तु परमेश्वर ने उसे नहीं ठुकराया था। परमेश्वर ने मसीह के बपतिस्मे के समय स्वर्ग से बात की थी, जिससे तैयारी के उसके तीस वर्षों की स्वीकृति पर मोहर लग गई थी। अब उसने उसकी निजी सेवकाई का अनुमोदन किया। इस प्रकार स्वर्ग की ओर से यीशु को अपनी आने वाली कठिन परीक्षा के लिए तैयार किया गया।

पहाड़ से नीचे: चेले परेशान हो गए

''जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी, जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना'' (मत्ती 17:9)। अपनी मृत्यु की घोषणा के सम्बन्ध में, मसीह ने अपने जी उठने की बात की थी (मत्ती 16:21), परन्तु अब उसने उस घटना को समय के हवाले से इस्तेमाल किया। एक बार फिर, उसके चेले उलझन में पड़ गए: वे बातें करने लगे ''मरे हुओं में से जी उठने का ज़्या अर्थ है'' (मरकुस 9:10)। प्रभु अक्सर दृष्टांतों में बातें करता था (मत्ती 13:35), इसलिए उन्हें लगा होगा कि वह सांकेतिक भाषा में ही बोल रहा है।

उन्होंने यीशु से नहीं पूछा कि ''मरे हुओं में से जी उठने'' का ज़्या अर्थ है, बल्कि किसी और बात के बारे में पूछा जिससे वे उलझन में थे। उन्होंने अभी अभी एलिय्याह को देखा था, परन्तु वह मसीह की सेवकाई के आरम्भ में नहीं, बल्कि उसे अन्त में दिखाई दिया था। इसलिए वे पूछने लगे, ''फिर शास्त्री ज़्यों कहते हैं कि एलिय्याह का *पहले* आना अवश्य है?'' (मत्ती 17:10)।

मसीह ने पहले ज़ोर देकर कहा था कि एलिय्याह के आने की भविष्यवाणियां यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई में पूरी हो चुकी थीं (मत्ती 11:14; लूका 1:17), परन्तु पहाड़ पर स्वयं एलिय्याह के दिखाई देने से प्रेरित उलझन में पड़ गए थे। यीशु ने फिर समझाया कि एलिय्याह तो पहले ही आ चुका था (मत्ती 17:12)। ''तब चेलों ने समझा कि उसने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है'' (मत्ती 17:13)।

सारांश

पहाड़ से उतरने पर, मसीह ने तुरन्त अपने आप को एक और भावनात्मक तराई में पाया-दुष्टात्मा से ग्रस्त एक जवान को चंगा करने की अपने चेलों के अयोग्यता को देखकर

(मत्ती 17:14-16)-परन्तु इस पर हम अगले पाठ में अध्ययन करेंगे। अभी, अपने इस अध्ययन से दो प्रासंगिकताएं बनाते हैं: पहली, हमारे जीवन में भावनात्मक उतार चढ़ाव आते रहते हैं, प्रभु इस बात को समझता है। दूसरी, जब हम प्रभु को निराश करते हैं वह तब भी हम से प्रेम करता है। इस पाठ में हमने कई भावनाओं पर ध्यान दिया जो यीशु के जीवन में आईं, परन्तु उनमें सबसे ऊपर प्रेम ही था। अपने चेलों द्वारा क्रोध दिलाने पर भी, वह उनसे प्रेम करता था। उनमें से एक ने बाद में लिखा कि वह ''अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा'' (यूहन्ना 13:1)। यदि आपको मन की शांति और तसल्ली इससे नहीं मिलती, तो किसी और चीज़ से नहीं मिल सकती।

टिप्पणियां

[1]आपको समीक्षा करनी चाहिए कि जाने की यह शृंखला ज्यों आरज़्भ हुई। (इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''सफलता का खतरा'' का अध्ययन करें।) [2]इन नगरों को इस पुस्तक में ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र में दिखाया गया है। [3]सदूकियों पर जानकारी के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 1'' पुस्तक में ''संसार जिसमें मसीह आया'' पाठ देखें। [4]हम देखेंगे कि मसीह की सेवकाई के अन्तिम सप्ताह अर्थात ''प्रश्नों के दिन'' के समय फरीसी और सदूकी फिर एक हो गए थे। [5]''राजनीति में कोई शत्रु नहीं होता'' एक पुरानी कहावत है, मतलब निकालने के लिए सब इकट्ठे हो सकते हैं। [6]मूल यूनानी शास्त्र का अर्थ है ''स्वर्ग में से।'' इसका अनुवाद ''परमेश्वर की ओर से'' के बजाय ''आकाश में से'' हो सकता है। [7]इसकी पहली एक चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में ''एक व्यस्त दिन'' पाठ देखें। [8]एक पुरानी कहावत है: ''रात के समय आकाश का लाल होना चरवाहे के लिए अच्छा है जबकि सुबह आकाश का लाल होना उसके लिए चेतावनी है'' (विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* संशो. संस्क. अंक 2, द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिनस्टर प्रैस, 1975], 129)। [9]''समयों के चिह्नों'' वाज़्यांश ''चिह्नों'' (आश्चर्यकर्मों) के लिए है जो यीशु कर रहा था जिनसे सिद्ध होता था कि वे ''समय'' आ चुके थे जिनकी यहूदी लोग सदियों से राह देख रहे थे: मसीहा और उसके राज्य का आने का समय! यह मसीह के द्वितीय आगमन के ''चिह्नों'' की बात *नहीं* है, जैसा कि कुछ लोगों का सुझाव होता है। [10]''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में ''योना का चिह्न'' पाठ देखें।

[11]इस पुस्तक में ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। [12]यह सज़्भव है कि ''सदूकियों का खमीर'' और ''हेरोदेस का खमीर'' वाज़्यांशों का इस्तेमाल एक दूसरे के स्थान पर किया गया है, परन्तु दोनों की अलग-अलग चर्चा करना उपयोगी हो सकता है। [13]अधिक जानकारी के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में ''तूफ़ान को शान्त करना'' पाठ देखें। [14]इस पुस्तक में पहले दिए गए, ''और उसने उनसे दृष्टांतों में बहुत सी बातें कहीं'' पाठ में खमीर पर दी गई चर्चा देखें। [15]इस पुस्तक में ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। [16]समानुभूति सहानुभूति की तरह ही है, बल्कि उससे भी मजबूत है। सहानुभूति के लिए किसी ''के साथ महसूस करना'' आवश्यक होता है, जबकि समानुभूति के लिए उस व्यज़्ति ''में होकर महसूस करना'' अर्थात, उस व्यज़्ति और उसकी समस्याओं को अपने ऊपर लेना होता है। [17]इस अंधे को चंगा करने के यीशु के आश्चर्यकर्म को केवल मरकुस ही बताता है। यह मरकुस के लिए दो विशेष आश्चर्यकर्मों में से एक है। दूसरा आश्चर्यकर्म 7:31-37 में वर्णित बहरे को चंगा करने का है। [18]इस पुस्तक में, दिए गए ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र पर बैतसैदा-जुलियास ढूंढ़ें। [19]कई बार कहा जाता है कि यह आश्चर्यकर्म ''धीरे धीरे'' हुआ था, परन्तु ऐसे शज़्द का इस्तेमाल गलत प्रभाव दे सकता है। इसमें अधिक से अधिक केवल कुछ मिनट ही लगे थे। यह आश्चर्यकर्म आज के

तथाकथित ''धीरे धीरे होने वाले आश्चर्यकर्मों'' जैसा नहीं था जिनमें दिन, हफ़्ते या महीने लगने की बात कही जाती है।[20]यह इस बात का अच्छा उदाहरण है कि लोगों के विचार जानकर सच्चाई का पता नहीं लगाया जा सकता।

[21]''अच्छा अंगीकार'' वाक्यांश 1 तीमुथियुस 6:12, 13 में मिलता है।[22]''योना के पुत्र'' के लिए कई अनुवादों में इब्रानी शब्द ''बार-योना'' ही दिया गया है। स्पष्टतया, पतरस के पिता का नाम योना था।[23]इसका अर्थ यह नहीं है कि पतरस को विशेष प्रकाशन मिला था जो दूसरों को नहीं मिला। बल्कि यह इस बात की स्वीकृति है कि यीशु के विषय में यह सच्चाई मनुष्य की ओर से नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर से दी गई थी। पतरस पर प्रकट करने का परमेश्वर का *ढंग* यीशु के जीवन तथा शिक्षाओं के द्वारा था।[24]मत्ती 16:18, 19 उनका मुख्य ''प्रमाण'' होता है कि पतरस ही पहला पोप था।[25]डब्ल्यू. ई. वाईन, *द एक्सपैंडड, वाईन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टमेंट वर्ड्स,* सम्पादक जेम्स ए. स्वैंसन के साथ जॉन आर. कोहलेन बर्गर त्रितीय (मिनियापुलिस: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 974. कई बार दावा किया जाता है कि यीशु ने आरामी भाषा में बात की होगी, जिसमें ''पत्थर'' के लिए दो अलग अलग शब्द नहीं हैं-परन्तु यह केवल अनुमान है। हम इतना ही जानते हैं कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन जो हमें इस घटना के बारे में बताता है यूनानी भाषा में है और इसमें दो अलग अलग शब्दों का इस्तेमाल हुआ है।[26]कुछ प्रोटेस्टेंट टीकाकार यह ध्यान दिलाते हैं कि इफिसियों 2:20 कहता है कि मसीही लोग ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बने हैं जिसके कोने का पत्थर मसीह आप है।'' इस पद से वे निष्कर्ष निकालते हैं कि मसीह एक अर्थ में कलीसिया को पतरस पर बनाने की बात कर रहा *था*- जबकि यह *केवल* पतरस पर ही नहीं बल्कि सब प्रेरितों पर बनी थी। यह व्याख्या खतरनाक नहीं है (यह कैथोलिक शिक्षा के तर्क का कि मसीह ने पतरस पर ही कलीसिया बनाई थी उज़र नहीं देती), परन्तु दो टिप्पणियां सही हैं: (1) मत्ती 16 और इफिसियों 2 के रूपक अलग अलग हैं और उन्हें उलझाना नहीं चाहिए। (2) इफिसियों 2:20 में भी, अर्थ यही होगा कि कलीसिया प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की *शिक्षाओं* पर बनी थी और उनकी शिक्षाएं यीशु पर केन्द्रित थीं (देखें 1 कुरिन्थियों 2:2; गलातियों 6:14)।[27]जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप्प वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 412. [28]यूनानी शब्द के अनुवाद ''कलीसिया'' और नये नियम में इस शब्द के अलग-अलग ढंग से इस्तेमाल पर चर्चा के लिए, इस पुस्तक में '''कलीसिया' शब्द का अर्थ'' पढ़ें।[29]कलीसिया का हर सदस्य भी मर जाता, तो भी कलीसिया नष्ट नहीं होनी थी, क्योंकि कलीसिया/राज्य का ''बीज'' वचन है (लूका 8:11)। क्योंकि वचन अविनाशी है (1 पतरस 1:23-25), कलीसिया *हमेशा* रहेगी, चाहे बीज के रूप में ही हो।[30]अटपटा लगने के कारण, अधिकतर अनुवादों में इस आयत का अक्षरश: अनुवाद करने का प्रयास नहीं किया जाता; उनमें केवल बांध या खोल ''दिया जाएगा'' के लिए ''shall be'' या ''will be'' ही किया जाता है (देखें KJV और NIV)। यद्यपि NASB के एक संशोधन में ''shall be'' कहने के लिए परिवर्तन किया गया था, परन्तु ताज़ा संशोधन में मूल अनुवाद ही दिया गया है।

[31]महासभा पर संक्षिप्त चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में ''संसार जिसमें मसीह आया'' पाठ देखें।[32]मसीह ने जोड़ा था कि ''तीन दिनों बाद'' वह ''फिर से जी उठेगा'' परन्तु प्रेरितों के लिए भी यह शब्द अर्थहीन थे (देखें मरकुस 9:10)।[33]''शैतान'' शब्द का मूल अर्थ ''विरोधी'' है।[34]जंगल में होने वाली परीक्षाओं में एक में क्रूस के बिना राजा बनने की परीक्षा भी थी।[35]''मुकुट'' किसी शासक द्वारा पहने गए ताज को कहते हैं।[36]मरकुस 8:34 के अनुसार, उसने निकट के दूसरे लोगों से भी ये शब्द कहे।[37]वहां खड़े लोगों में से कम से कम एक अर्थात यहूदा ने राज्य की स्थापना से पहले मृत्यु देख *ली,* परन्तु अधिकतर ने नहीं।[38]जो लोग यह विश्वास करते हैं कि मसीह ने अभी अपना राज्य नहीं बनाया (जैसे हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा को मानने वाले) वे मरकुस 9:1 को समझ नहीं पाते। एक प्रसिद्ध ''पैंतरा'' यह कहना है कि यह रूपान्तर की बात है। जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे ने लिखा है, ''इसे रूपान्तर की बात कहने वाले निश्चय ही गलत हैं, क्योंकि उस समय कोई स्पष्ट राज्य स्थापित नहीं हुआ था'' (मैज़र्वे एण्ड पैंडलटन, 417)।